मनुष्य उवाच	भारी मतभेद	शिवभगवान उवाच
शास्त्र, संत-महात्मा, दार्शनिक, धर्मगुरु कहते आये हैं :		ज्ञानसागर, निराकार परमात्मा शिव कहते हैं :
१. भगवान सर्वव्यापी है वह ठिक्कर-भित्तर, सर्प, बिच्छु, वाराह, चोर, डाकू सभी में है वह नाम रूप से न्यारा है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर उसके ही रूप है ।	१. परमात्मा को ठीकर –पत्थर, जानवर, चोर, डाकू सभी में है कितनी भारी भूल अथवा ग्लानि की है । यह कितना बड़ा पाप है । यदि परमात्मा सर्वव्यापी होते तो उसके शिवलिंग रूप की पूजा कैसे व क्यों होती अत्व्हा वह दिव्य जन्म कैसे लेते, उनके अवतरण के लिए क्यों पुकारते व शिवरात्रि क्यों मनाते, गीता ज्ञान कैसे देते । गीता के महावाक्य कैसे सिद्ध होते कि मैं परम पुरुष हूँ, परमधाम वासी हूँ, यह सृष्टि एक उल्टा वृक्ष है । मैं इसका बीज ऊपर रहता हूँ । परमात्मा यदि सर्वव्यापी होते तो सब परमात्मा हो गए फिर कौन किसको दर्शन दें । जहाँ गुणी है वहाँ गुण अवश्य होगा । यदि परमात्मा भी आसुरी कर्तव्य करने लगे तो वह दुःखकर्ता हुआ सुखकर्ता नहीं । दूसरी बात यदि भगवान का कोई नाम और रूप ही न हो तो न उनसे सम्बन्ध (योग) की जा सकती है, न ही उनके नाम व कर्तव्यों की चर्चा ही हो सकती ।	१. मैं नाम रूप से रहित या सर्वव्यापी नहीं हूँ बल्कि निराकार परम कल्याणकारी परोपकारी सत्ता हूँ । सर्वव्यापी तो ५ विकार है । मुझे निराकार इसलिए नहीं कहा जाता क्योंकि मेरा कोई रूप नहीं है परन्तु इसलिए कि मेरा मनुष्यों के समान साकार रूप अथवा ब्रह्मा, विष्णु, शंकर इन त्रिदेवों के समान सूक्ष्म आकर नहीं है । मैं अव्यक्तमूर्त हूँ । मेरा रूप निराकार अशरीरी, स्वयं प्रकाशमय ज्योतिर्लिंग है जिसका यादगार शिवलिंग के रूप में है । मेरा वास्तविक सच्चा गुण परिचायक नाम त्रिमूर्ति शिव है जो कभी बदलता नहीं क्योंकि मैं जन्म-मरण के चक से परे और सुख दुःख से न्यारा हूँ । मैं अनंत सुनहरे लाल दिव्य प्रकाश वाले ब्रह्मलोक (परलोक/ निर्वाण धाम / परमधाम शांति धाम) में निवास करता हूँ । मैं शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद शक्ति इत्यादि सर्वगुणों का भंडार हूँ । मैं ज्ञानसागर, त्रिकालदर्शी हूँ क्योंकि मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ और स्वर्ग का रचियता एवं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी रचियता त्रिमूर्ति हूँ ।
२. सर्व-शास्त्र शिरोमणि श्रीमदभगवद-गीता का भगवान अथवा ज्ञानदाता श्रीकृष्ण है जिन्होंने द्वापर युग के अंत में युद्ध के मैदान में, अर्जुन के रथ पर सवार होकर दिया था ।	२. श्रीकृष्ण सतोप्रधान सृष्टि का शरीरधारी देवता है । उनके तो अपने माता पिता, शिक्षक थे । कोई भी देहधारी को भगवान अथवा सुप्रीम बाप, टीचर, सतगुरु नहीं कह सकते । गीता ज्ञान दाता परमात्मा शिव का माता के गर्भ से जन्म न लेने से उनका कोई माता-पिता नहीं है ।	२. गीता का भगवान अथवा ज्ञानदाता श्रीकृष्ण नहीं बल्कि निराकार पतितपावन परमात्मा शिव ने दिया । जिन्होंने कलियुग के अंत व सतयुग के आदि के संगम समय अर्थात धर्म ग्लानि के समय ब्रह्मा तन द्वारा दिव्य जन्म और गीता ज्ञान देकर सतयुग की तथा श्री कृष्ण (श्री नारायण) के स्वराज्य की स्थापना की । कृष्ण तो मनुष्य सृष्टि का सबसे उत्तम पुरुष है जो राजयोग सीखकर स्वर्ग का मालिक बनता है ।
३. देहधारी गुरु ही सद्गतिदाता है । उनके द्वारा ही सद्गति अथवा मुक्ति मिल सकती है ।	३. शास्त्र अनुसार यदि गीता ज्ञान द्वापर अंत में दिया गया तो अधर्म का युग अथवा कलियुग कैसे प्रारंभ हुआ ।	३. सर्व का सद्गतिदाता एक निराकार जन्ममरण रहित सदा पावन शिव परमात्मा ही है। कोई भी देहधारी मनुष्य भगवान् नहीं व न ही मनुष्य मनुष्य की सद्गति कर सके क्योंकि वे विकार से पैदा होने से पतित हैं तथा जन्म-मरण के चक्र में आते हैं ।

मनुष्य उवाच	भारी मतभेद	शिवभगवान उवाच
शास्त्र, संत-महात्मा, दार्शनिक, धर्मगुरु कहते आये हैं :		ज्ञानसागर, निराकार परमात्मा शिव कहते हैं :
४. आत्मा चैतन्य, मन-बुद्धि से परे द्रष्टा है । मन-बुद्धि आत्मा के अंत:करण अथवा जड़ यन्त्र है । आत्मा निर्लेप है , वह पाप-पुण्य, सुख-दु:ख से प्रभावित नहीं होती, प्रभावित केवल मन-बुद्धि ही होती है इसलिए वह अकर्ता व भोक्ता है । सारे शरीर में उसका वास है ।		४. आत्मा एक चैतन्य एवं अविनाशी ज्योतिबिंदु है जो कि मानव देह स्थित भृकुटि में वास करती है तथा सारे शरीर का संचालन करती है । मन –बुद्धि आत्मा से अलग नहीं बल्कि आत्मा के ही विचार व निर्णय करने की शक्तियाँ हैं । कर्म के अनुसार आत्मा में संस्कार बनते हैं तदानुसार आत्मा ही पतित एवं पावन बनती है । सुख व दु:ख भोगती है । अकर्ता व अभोक्ता केवल निर्वाणधाम अथवा मुक्तिधाम में ही होती है जहाँ उसके कर्म व संस्कार मर्ज रहते हैं ।
५. आत्मा परमात्मा का अंश है, 'आत्मा सो परमात्मा' । जैसे समुद्र में पानी का बुदबुदा फिर उसी में समा जाता है वैसे आत्मा भी जब अपने पार्ट से मुक्त हो मोक्ष को पाती है तब परमात्मा में लीन हो जाती है । मुक्ति प्राप्ति के पश्चात फिर इस कर्मक्षेत्र पर वापस नहीं आती ।		५. हर आत्मा का मुझसे भिन्न अविनाशी व अलग अस्तित्व है । सभी में अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है जो मिले न दुसरे से । मुक्ति सदाकाल के लिए होती नहीं और न ही मध्य में कोई मुक्तिधाम जा सके । मुक्ति का अर्थ आत्मा का परमात्मा में लीन होना नहीं है बल्कि देह, कर्म एवं उसके फल के बंधन से मुक्ति पाकर मुक्तिधाम में शांति की अवस्था में विश्राम करना । कल्प के अंत में जब सभी आत्माएं इस सृष्टि मंच पर आ जाती है तब महाविनाश के पश्चात परमात्मा के संग वापस चली जाती है और कुछ काल के लिए मुक्ति अवस्था में रहती है । आत्मा परमात्मा समान हो सकती है किन्तु परमात्मा नहीं बन सकती । परमात्मा सदा पावन, जन्म मरण रहित है जबकि आत्मा जन्म-मरण के चक्र में आकर पतित बनती है ।

मनुष्य उवाच	भारी मतभेद	शिवभगवान उवाच
शास्त्र, संत-महात्मा, दार्शनिक, धर्मगुरु कहते आये हैं :		ज्ञानसागर, निराकार परमात्मा शिव कहते हैं :
६. आत्मा ८४ लाख योनियों में जन्म धारण करती है व अंत में मानव जन्म मिलता है जब उसके पाप-पुण्य समान हो जाते हैं । अन्य योनियाँ उसे दंड भोगने अथवा बुरे कर्मों के हिसाब चुकतु करने हेतु मिलता है ।		६. ‘जैसा बीज वैसा वृक्ष’ इस नियम के अनुसार आत्मा ८४ लक्ष योनियों में नहीं बल्कि बुरे कर्मों का दंड मनुष्य योनी में ही भोगती है । बुरे गुण-कर्म-स्वभाव के कारण वह अधिक बुरा बन जाता है और पशु-पक्षी से अधिक दुःखी भी होता है परन्तु उन योनियों में जन्म नहीं लेता है । यदि ऐसा होता तब तो हर वर्ष मनुष्य गणना बढ़ती न जाती बल्कि घटती जाती और पशु पक्षियों की गणना बढ़ती जाती परन्तु ऐसा होता नहीं । मनुष्य आत्माएं अपने गुण, संस्कार और कर्म के अनुसार अन्य प्रजातियों से भिन्न है । जीवित प्राणियों की कुल ८४ लक्ष योनियाँ हैं इसे नकारा नहीं जाता । मनुष्य आत्मा ५००० वर्ष के कल्प में अधिकतम केवल ८४ जन्म लेती है ।
७. आत्मा व पदार्थ दोनों ब्रह्म का ही प्रकटीकरण है । ब्रह्म परमात्मा का ही दूसरा नाम है । “सर्व खल्विदं ब्रह्म ‘ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या’ ब्रह्म आधार है उसपर ही यह जगत अध्यस्त अथवा भासमान होता है ।		७. ब्रह्म लोक ‘साकार लोक’ एवं ‘सूक्ष्म लोक’ के पार सभी आत्माओं के रहने का स्थान है जहाँ सुनहरे लाल रंग का प्रकाश फैला हुआ है जिसे ही ब्रह्म तत्व, छठातत्व अथवा महातत्व भी कहते हैं । ब्रह्म चैतन्य तत्व नहीं है । सृष्टि पर पार्ट बजाने के पहले परमात्मा शिव के साथ सभी आत्माएं यहाँ मुक्त अवस्था में रहती हैं । आत्मा ब्रह्म का वंश नहीं और न ही ब्रह्म के तत्व परिवर्तन का परिणाम है ।
८. कलियुग अभी बच्चा है उसके अंत में अभी लाखों वर्ष शेष है		८. कलियुग अभी बूढा हो चुका है, अपनी अंतिम श्वासें गिन रहा है । सृष्टि के महाविनाश की घड़ी निकट है । प्रकृति भी हलचल में है, विनाश हेतु एटम बम, हाइड्रोजन बम तथा मिसाइल बन चुके हैं, महामारी भी फैल रही है । अब भी यदि कोई कहे महाविनाश दूर है तो घोर अज्ञान में है

मनुष्य उवाच	भारी मतभेद	शिवभगवान उवाच
शास्त्र, संत-महात्मा, दार्शनिक, धर्मगुरु कहते आये हैं :		ज्ञानसागर, निराकार परमात्मा शिव कहते हैं :
९. एक कल्प की आयु ४३३२००० वर्ष है जिसमें सतयुग १७२८००० वर्ष, त्रेतायुग १२९६००० वर्ष, द्वापरयुग ८६४००० वर्ष व कलियुग ४३२००० वर्ष है । जब चारों युग अर्थात महायुग एक हज़ार बार पुनरावृत होते हैं तब ब्रह्मा का एक दिन होता है और इतने ही बार पुनः जब निकल जाये तब ब्रह्मा की रात होती है		९. एक कल्प की आयु ५००० वर्ष है जिसमें प्रत्येक युग की आयु १२५० वर्ष है । सतयुग – त्रेतायुग (१ – २५०० वर्ष) तक ज्ञान चलता है जहाँ एक देवता धर्म का अखण्ड, अचल, श्रेष्टाचारी राज्य रहता है, सम्पूर्ण पवित्रता, सुख, शांति रहती है इसे ही ब्रह्मा का दिन कहते हैं । द्वापर – कलियुग (२५०१ – ५००० वर्ष) तक भक्ति चलती है जहाँ अनेक धर्म युक्त भ्रष्टाचारी राज्य रहता है, सर्वत्र अपवित्रता, दुःख, अशांति, हिंसा का साम्राज्य रहता है इसे ही ब्रह्मा की रात कहते हैं । मै कलियुग अंत व सतयुग आदि के संगम पर याने संगमयुग में अधर्म व भ्रष्टाचार वाली पुरानी विकारी दुखमय दुनिया का अंत कर पवित्रता, सुख, शांति, समृद्धि वाली नयी दैवी विश्व का निर्माण करता हूँ ।
१०. शास्त्र पढ़ने, यज्ञ, तप करने से परमात्मा की प्राप्ति होती है तथा तीर्थों में पवित्र स्नान करने से आत्मा पावन बनती है ।		१०. शास्त्र पढ़ने, यज्ञ, तप करने से मेरे को कोई मिलता नहीं । ये सभी पांच तत्वों की उपासना है । तीर्थों में स्नान करने से केवल शरीर के मैल धुलते हैं, आत्मा पावन नहीं बनती । प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो ज्ञान दे रहा हूँ उसमें स्नान करने तथा मुझ शिव परमात्मा को जो हूँ जैसा हूँ वैसे याद करने से सभी पापों से मुक्त होकर पुण्यात्मा अथवा देवात्मा बनेंगे ।
शास्त्रों, महात्माओं, दार्शनिकों और धर्मगुरुओं से प्राप्त शिक्षायें मानवजाति को परमात्म अनुभूति के विपरीत दिशा की ओर ले गये जिससे भ्रम, दरार, टकराव, विभाजन, अशांति और दुःख की उत्पत्ति हुई अर्थात विनाश अथवा नर्क की ओर चले गए जो आज हम देख रहे हैं ।		ज्ञानसागर निराकार परमात्मा उन भूलों को सुधार कर विश्व में सम्पूर्ण पवित्रता, शांति और समृद्धि की वास्तविक अवस्था को पुनर्स्थापन करने आये हैं याने स्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन....परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन ।

याद रहे जब परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं तब परमात्मा शक्ति द्वारा चेतन व अचेतन प्राणियों में क्रांति एवं परिवर्तन की शुरुआत होने लगती है । यह नए युग के आगमन और पुराने युग के समाप्ति की निशानी है । परमात्मा को जानो और सच्चे रहस्य को जानो, स्व के परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करो... *अभी नहीं तो कभी नहीं*